Shakti's Classes for Ayurveda
Chiseling the Brilliants

SINCE 2011 IN VARANASI

SHAKTI'S CLASSES for AYURVEDA

A Complete Centre for MD/MS(AIAPGET.), MO (UPSC & PSC), Other Ayurvedic Entrance Examination and Foundation Courses for Proff. I, II & III

- Madhav Nidan
- Bhel Samhita
- Harit Samhita
- Yogaratnakar

By
Dr. Shakti Raj Rai
9452376134

माधव निदान

Dr. Shakti Raj Rai

अन्य नाम - रोग विनिश्चय, रुग्ण विनिश्चय

ग्रंथ का उद्देश्य -

- नानातन्त्रविहीनानां (अनेक शास्त्रों के ज्ञान से शून्य)
- भिषजां अल्पमेधसां (अल्प बुद्धिवाले वैद्यों के लिए)
- सुखं विज्ञातुं आतंक (सुगमता से रोगों के ज्ञान के लिए)

मुख्य विषय - निदान, लक्षण, अरिष्ट व उपद्रव।

रचयिता - माधवकर पुत्र इन्दुकर

काल - 7वीं शताब्दी

माधवकर की कुछ अन्य रचनाएँ -

- आयुर्वेद प्रकाश, कूटमुद्गर, पर्यायरत्नमाला, रसकौमुदी, आयुर्वेदीय रसशास्त्र

माधव निदान पर संस्कृत टीका –

1. **मधुकोष टीका -** दो टीकाकारों का योगदान है -

I. विजयरक्षित - इन्होंने अश्मरी निदान प्रकरण तक टीका की है।

II. श्री कण्ठदत्त - शेष भाग पर टीका की है।

2. **आतंक दर्पण -** वाचस्पति द्वारा मधुकोष टीका को आधार बना कर।

हिन्दी टीका –

विद्योतिनी व्याख्या - सुदर्शन शास्त्री

शारदा व्याख्या - शारदा चरण सेन

सर्वांग सुन्दरी - लाल चन्द्र वैद्य

(सर्वांग सुन्दरा - अष्टांग हृदय पर अरुण दत्त की संस्कृत टीका - 13वीं शताब्दी)

विमला मधुधारा - आचार्य ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

अंग्रेजी टीका - डॉ0 मुलेन वेल्ड

माधव निदान का योगदान –

- अम्लपित्त, मेदोरोग, योनिकन्द, सूतिकारोग, स्तनरोग, श्लीपद, आमवात, परिणामशूल, अन्नद्रव शूल का प्रथमतः स्वतंत्र रूप से विस्तार से वर्णन किया।
- गुल्म व शूलरोग का पृथक वर्णन।
- स्त्रीरोगों का क्रमशः 6 अध्यायों में उल्लेख किया।
- (असृग्दर, योनिव्यापद, योनिकन्द, सूतिका रोग, स्तनरोग व स्तन्यदुष्टि निदान।)
- वातव्याधि का वर्णन तो किया लेकिन आवरण का वर्णन नहीं किया।
- विजया शब्द का प्रयोग माधवकर ने हरीतकी के लिए कहा है।

आमवात

निदान - विरुद्धाहारचेष्टस्य मन्दाग्नेर्निश्चलस्य च।
स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्न व्यायामं कुर्वतस्य।।
वायुनां प्रेरितो ह्यामः श्लेष्मस्थानं प्रधावति।
तेनात्यर्थं विदग्धोऽसो धमनीः प्रतिपद्यते।।

परिभाषा - युगपत् कुपितावन्तस्त्रिक संधि प्रवेशकौ। (वात व आम)
स्तब्धं च कुरुतो गात्रं आमवातः स उच्चते।।

दुष्ट आमरस का लक्षण

वातपित्तकफैभूय दूषितः सोऽन्नजो रसः।
स्रोतांस्यभिष्यन्दयति नानावर्णोऽतिपिच्छिलः।
जनयत्याशु दौर्बल्यं गौरवं हृदस्य च।
व्याधिनामाश्रयो....... अतिदारुणा।।

सामान्य लक्षण - अंगमर्दोऽरुचिस्तृष्णा ह्यालस्यं गौरवं ज्वरः।
अपाकःशूनताऽगांनामामवातस्य लक्षणम्।।

प्रबृद्ध आमवात लक्षण -

- स कष्टः सर्वरोगाणां यदा प्रकुपितो भवेत्।
- विभिन्न संधियो में सरुजा शोथ।
- व्याविद्ध इव वृश्चिकैः
- उत्साह हानि वैरस्यं दाहं च बहुमूत्रताम्
- कुक्षौ कठिनतां शूलं तथा निद्राविपर्ययाम्।
- हृदग्रहं विड्बिवद्धताम्।
- जाड्यता, आन्त्रकूजन, आनाह आदि कष्ट उपद्रव।

दोषानुबंध आमवात का लक्षण -

- वात अनुबंध - शूल
- पित्त अनुबंध - राग व दाह
- कफ अनुबंध - गुरुता, कण्डु व स्तिमितं

साध्यतासाध्यता -

- एक दोषज - साध्य
- द्विदोषज - याप्य
- सर्वदेहचर, शोथ व सन्निपातज - कृच्छ्रसाध्य

****

Shakti's Classes for Ayurveda

भेल संहिता

Dr. Shakti Raj Rai

रचना - चरक संहिता के समान (120 अध्याय, 8 स्थान)

रचयिता - महर्षि भेल (गांधार निवासी, अग्निवेश के सहपाठी)

ग्रन्थ काल - 7वीं शताब्दी

- ऋषि परिषद में सर्व प्रथम उपस्थिति संहिता।
- 3 पाण्डु लिपियों का उल्लेख, संहिता तंजावर में प्राप्त हुई।

रचना - चरक संहिता स्वरूप में, सूत्रस्थान 1 से 3 तक अनुपलब्ध।

संहिता चतुर्थ अध्याय से प्रारम्भ। (कुष्ठोपचार अध्याय प्रथम)

सूत्रस्थान

1. कुष्ठोपचार -

- सुवर्णपुष्पी आदि द्वारा शोधन - सुवर्णपुष्पी (सातला)
- न च व्याधिमुपेक्षेत शरीरं पतितं बुधः।- संदर्भ
- कुष्ठ में - अवपीड नस्य - 3 दिन के अंतर पर

वमन - 15 दिन के अंतर पर

विरेचन - 30 दिन के अंतर पर

रक्तमोक्षण - 6 माह के अंतर पर

कुष्ठ में पथ्य - श्यामाक, मकुष्ठ व चणक

2. अत्याशितीय -

- **अधिक भोजन करने से -** कायाग्नि दूषित।

  द्विविध लाघनं द्विविध सुगौरवं...........।
- **त्रिभाग सौहित्य अर्धभाग सौहित्यं -** गुरु आहार भी लघु हो जाता है।

Shakti's Classes for Ayurveda

- ❖ **धर्मस्सत्यमहिंसा च प्रायो हि अन्नं समश्रितम् -** संदर्भ
  (धर्म, सत्य व अहिंसा - ये प्रायः अन्न पर आश्रित होते है।)
- कफ रोगों में वमन, पित्त रोगों में विरेचन, वात रोग में निरुह व रक्तज रोगों में अवसेचन कराना चाहिए।

3. नवेगान्धारणीय-

- ➢ अधारणीय वेगों में पित्त तथा कफ को भी माना। (कुल 12)
- ➢ वेगधारण से वातप्रकोप के कारण आयु की हानि।

शुक्र वेगधारण	शर्करा व अश्मरी।
छर्दि, पित्त व कफ वेगधारण	त्वक दोष व शोफ।
जृम्भा धारण	अंधता
क्षवथु, उद्गार व निद्रा	शिरःशूल
वाष्प धारण	तिमिर

- ❖ **विलेपन का गुण** ह्लादयति कण्डू हन्ति प्रसादन
- ❖ **धूमवर्ति प्रमाण** 6, 8 या 12 अंगुल (धूमपान के आठ काल)
- ➢ भोजन के आदि, मध्य व अन्त में जलपान के गुण -

  पूर्व - कृश शरीर होता है।
  मध्य - भोजन का अपकर्षण नहीं होता।
  अंत - समत्व उत्पन्न करता है।
- ➢ भोजनोपरान्त अग्नि-तापन तथा 100 पद टहलने का निर्देश।

दधि का सेवन निषेध - कुष्ठ व कण्ठ रोगी के लिए।

4. इन्द्रियोपक्रमणीयः

ऋतुओं के अनुसार दिन के अंतराल मैथून का निर्देश -

हेमन्त	शिशिर	वर्षा	शरद	वसन्त	ग्रीष्म
5 दिन	7 दिन	9 दिन	10 दिन	15 दिन	30 दिन

- ❖ निदाहे पश्चिमे मासे मैथूनश्चव वर्जयेत्।

Shakti's Classes for Ayurveda

- संहारयेद् रोमनखं त्रिर्मासस्य च मानवः।

(क्षौर कर्म - 3 माह पश्चात्)

5. मात्राशितीयः

- मात्राशी स्यात् विपक्वाशी दण्डपाणिर्मिताध्वगः।
- शरद, वसन्त व प्रावृट् ऋतुओं के अनुवासन बस्ति लेनी चाहिए।
- श्रावण आदि के 4 माह उबला पानी पीनी चाहिए।

(आक्वाथित जलं मांसांश्चतुरो मात्रया पिवेत्। श्रावण प्रभृतीन.......।)

त्रिफला सेवन विधि –

अभुक्त - आमलकी	आमलकी - कषाय रस - कफ शमन
भुक्त्वा - हरीतकी	अम्ल रस - वात शमन
भुक्त परिणामान्ते – विभीतकी	मधुर रस - पित्त शमन

- हरीतकी पित्ताशयस्थ मूर्च्छित पित्त को क्षण भर में उत्तेजित कर शमन कर देती है।
- आहार के पचने पर पित्त तथा श्लेष्मा की वृद्धि होती है, अतः उन दोनों के शमन की इच्छा से विभीतकी का सेवन करना चाहिए।

6. चतुष्पादभिषग्जितीयः

- चतुष्पाद में भेषज को प्रथम तथा वैद्य को अंतिम स्थान दिया तथा परिचारक को 'प्रतिश्रावी' कहा है।
  (औषध-प्रतिश्रावी-आतुर-भिषक्)
- भद्रशौनक ने चतुष्पाद में वैद्य की प्रधानता का खण्डन किया है तथा चारों को प्रधान माना है।

7. आमप्रदोषीय

जीर्ण भोजन का लक्षण - पूर्व में - मधुर उद्गार
मध्य में - अम्ल उद्गार
पश्चात में - कटु उद्गार

अजीर्ण की चिकित्सा - प्रथम लंघन पश्चात पाचन तदुपरांत यवागु देकर अग्नि वृद्धि करते हैं।

शूल तथा मंदाग्नि में - स्वेदन व फलवर्ति प्रयोग।

Shakti's Classes for Ayurveda

हारीत संहिता

Dr. Shakti Raj Rai

प्रथम स्थान

- आत्रेय द्वारा प्रणीत संहिताओं में श्लोकों की संख्या –

24,000	12,000	6,000	3,000	1,500

- एकं शास्त्रं वैद्यमध्यात्मकं वा सौख्ये चैकं यत्सुखे व तपो वा।।

- अनध्ययन काल – 12

हारीत संहिता में स्थान	अन्नपान	अरिष्ट	चिकित्सा	कल्प	सूत्रस्थान	शारीर	परिशिष्ट
अध्याय	23	9	58	6	5	1	1
कुल अध्याय 103							

चिकित्सा के प्रकार

शल्य	शालाक्य	कायचिकित्सा	बालचिकित्सा
अगद विष तंत्र	भूतविद्या	रसायन	वाजीकरण

- वर्णन करते समय कुल 9 अंगों का उल्लेख किया।
- अगद तंत्र एवं विष तंत्र का स्वतंत्र वर्णन।

- अन्य 8 प्रकार की चिकित्सा -

यन्त्र	शस्त्र	अग्निकर्म	क्षारकर्म	औषध	पथ्य	स्वेदन	मर्दन

- शिरोरोगा नेत्ररोगाः कर्णरोगा विशेषतः - शालाक्य तन्त्र
- कोष्ठामयानां शमनी क्रिया कायचिकित्सित - कायचिकित्सा
- सर्पवृश्चिक लूतानां विषोपशमनी तु या - विषतन्त्र

- गभोपक्रमविज्ञानं सूतिकोपक्रमस्तथा।
  बालानां रोगशमनं क्रिया बालचिकित्सितम्।। - बाल चिकित्सा

SHAKTI'S CLASSES FOR AYURVEDA

- गुदामयबस्तिरुजं शमनं वस्तिरुहकम्।
  आस्थापनानुवासन्तु अगदं नाम एव च।। - अगद तंत्र
- क्षीणानां चाल्पवीर्याणां बृंहणं बलवर्धनम्।
  तर्पणं सप्त धातुनां वाजीकरणंमुच्यते।। - वाजीकरण

चिकित्सा के उपांग - 6 छिन्नं, भिन्न, भग्न, क्षत, पिच्चित, दग्धप्रतिकार

चिकित्सा उपक्रम - 2 शमन व कोपन

वैद्य - 2 रोगोपचारज्ञ व रोगापचारज्ञ

- उपचार करने से कृच्छ्रसाध्य रोग याप्य, याप्य रोग साध्य हो जाती है और कृच्छ्रसाध्य रोग निश्चित रूप से साध्य हो जाते है।
- पहले आहार का पाक होता है आहार के पाक होने पर दोषों का पाक होता है दोषों के क्षय होने पर धातुओं का पाक होता है तथा धातु क्षय होने पर प्राण का पाक (मृत्यु) होता है।
  - पचेत्प्रथममाहारं दोषानाहारसंक्षये।
    दोषक्षयेऽनलो धातून् प्राणान् धातुक्षये सति।।
- वैद्य आयु व बल का प्रदाता नही होता -
  नैवायुषश्च बलादानकरो हि वैद्यः।
- चिकित्सा से धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति होती है।

देश- 3

आनूप - वातकफ ↑ जांगल - रक्तपित्त ↑ साधारण –

काल- 3 कलयते लोकं कालः। कलयते विश्वं तेन।

अतीत	अनागत	वर्तमान
वर्षा	हिम	उष्ण
उदय	मध्य	अस्त
उत्पादक (उत्पत्तिकारक)	प्रवर्तक (प्रतिपालक)	संहारक (मृत्युवश)

वय विभाजन

पुरुष की श्रेष्ठ अवस्था	25 से 50 वर्ष	कठोर बल व उत्तम आयु
स्त्री की श्रेष्ठ अवस्था	24 से 37 वर्ष	उत्तम आयु

SHAKTI'S CLASSES FOR AYURVEDA

पुरुष		स्त्री	
बाल	16 वर्ष पर्यन्त	बाला	5 वर्ष
युवा	25 वर्ष पर्यन्त	मुग्धा	11 वर्ष
मध्यम	70 वर्ष पर्यन्त	प्रोढ़ा	20 वर्ष
वृद्ध	70 वर्ष से अधिक	प्रगल्भा	33 वर्ष
हीन	70-80 वर्ष		

प्रकृति- 4

वातज	केशाल्प रूक्षो, दीर्घस्वन, दीर्घक्रम लोलुप, ऊनसत्व, अम्ल इच्छु
पित्तज	गौरऽतिपिंग, मधुपिङ्गनेत्र, स्तुतिप्रियो दन्तनिशुष्क वर्णो,क्षणभंगुर
कफज	सुकेशनख दीर्घरोमा गम्भीरशब्द श्रुतशास्त्रसंगीतवाद्योऽतिसहिष्णु
सन्निपातज	रामाप्रियो, भारसहो

ऋतु के अनुसार दिशा की श्रेष्ठ वायु–

शिशिर	पूर्व या उत्तर दिशा
हेमन्त	आग्नेय या उत्तर दिशा
बसन्त	दक्षिण दिशा
ग्रीष्म	नैर्ऋत्य दिशा
वर्षा	पश्चिम दिशा
शरद	वायव्य दिशा

जनपदोध्वं होने पर -

कुशल वैद्य को हाथी की पित्त से, घोड़े की कफ से व मनुष्यों की वायु से हर समय रक्षा करनी चाहिए।

गाय में तिलक
मनुष्य में राज
हाथी में पावक
घोड़ा में वेद्य

SHAKTI'S CLASSES FOR AYURVEDA

योगरत्नाकर

Dr. Shakti Raj Rai

वैद्य-प्रशंसा

- अन्नदो जलदश्चैव आतुरस्य चिकित्सकः।

  त्रयस्ते स्वर्गमायान्ति विना यज्ञेन भारत!।

भगवान् श्री कृष्ण कहते है कि हे अर्जुन! अन्न देने वाला, जल देने वाला और रोग से पीड़ित की चिकित्सा करने वाला, ये तीनों बिना यज्ञादि किये ही स्वर्ग को प्राप्त होते हैं।

- वैद्य को चिकित्सा से पंच लाभ प्राप्ति - धर्म, मैत्री, द्रव्यलाभ, यश, अभ्यास।
- क्वचिद्धर्मः क्वचिन्मैत्रीक्वचिदर्थः क्वचिद्यशः।

  कर्माभ्यासः क्वचिच्चेति चिकित्सा नास्ति निष्फल।।

अष्टांग संग्रह उत्तरतन्त्र - 50

वैद्य को चिकित्सा करने से कहीं पर धर्म, कहीं पर मित्रता, कहीं पर द्रव्यलाभ, कहीं पर यश और कहीं पर चिकित्सा करने के अभ्यास का ही लाभ होता है। इस लिये चिकित्सा कभी भी निष्फल नहीं होती है।

- **वैद्य का कर्त्तव्य -** रोग के यथार्थरूप का ज्ञान तथा रोगी के कष्ट को दूर करना, यही वैद्य का यथार्थ कर्त्तव्य है। वैद्य आयु का स्वामी नहीं है - अर्थात् आयु के हटाने में समर्थ नहीं है।

❖ व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः।

एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः।।

- शारीरिक बल का मूल अग्नि एवं जीवन का मूल वीर्य है।

❖ अग्निमूलं बलं पुंसां रेतोमूलं च जीवितम्।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वह्निं शुक्रं च रक्षयेत्।।

- दूत के प्रश्न की अक्षर-संख्या को जोड़ एवं तीन से गुणा कर आठ से भाग देने पर यदि सम शेष हो तब रोगी की मृत्यु यदि विषम हो तो जीवित रहेगा।
- दूत का लक्षण है मुख में ताम्बूल धारण करना।

अष्टविध परीक्षा-

❖ रोगाक्रान्तशरीरस्य स्थानान्यष्टौ निरीक्षयेत्।

नाडीं मूत्रं मलं जिह्वां शब्दं स्पर्शं दृगाकृती।।

Shakti Classes for Ayurveda

रोगियों के आठ स्थानों का निरीक्षण करने का वचन - रोग से पीड़ित मनुष्य के नाड़ी, मूत्र, पुरीष, जिह्वां, शब्द, स्पर्श, दृष्टि और आकृति इन आठ स्थानों की परीक्षा करनी चाहिये।

नाड़ी परीक्षा

- रोगज्ञानार्थ वैद्य अपने दाएँ से रोगी के दाएँ हस्त के अंगुष्ठमूल में स्पर्श करें।
- वैद्य प्रभातकाल में 1 प्रहर तक नाड़ी परीक्षा करें; नाड़ी परीक्षा 3 बार करने का निर्देश है; वैद्य अपनी 3 अंगुलियों से रोगी की नाड़ी परीक्षा करे।

- नाड़ी के पर्याय - हंसी, धरणी, धरा, तन्तुकी, स्नायु।
- स्त्रियों के बाएँ हाथ एवं बाएँ पैर में नाड़ी परीक्षा करने का निर्देश है।
- नाड़ी परीक्षा रत्न की तरह अभ्यास करने से होती है।
- नाड़ी में त्रिदेव की स्थिति है - वातनाड़ी में ब्रह्मा, पित्तनाड़ी में शंकर एवं कफ नाड़ी में विष्णुवास।

वातनाड़ी	सर्प, जलौकावत् गति (प्रभञ्जनेनाड़ी)
पित्तनाड़ी	काक, लावक, मण्डूकवत्, (चपल गति नाड़ी)
कफनाड़ी	हंस, मयूर, पारावत, कपोत, कुक्कुट गति
वातकफनाड़ी	सर्पहंस गति
वातपित्तनाड़ी	मुहु:सर्प मुहु: भेक गति
पित्तश्लेष्मनाड़ी	हरिहंस गति

सान्निपातिक नाड़ी - (अ) 'काष्ठकुट्टी यथा काष्ठं कुट्टते चातिवेगतः स्थित्वा स्थित्वा'

(ब) नित्यं स्कन्धे स्फुरति पुनरप्यङ्गुलीः संस्पृशेत् (मृत्यु)

मूत्रपरीक्षा

रात्रि के अंतिम प्रहर में 4 घटिका रात्रि शेष रहते रोगी को उठा मूत्र की मध्यधार को कांचपात्र में एकत्रित कर निरंतर सूर्योदय होने पर परीक्षा करें।

वातकोप में मूत्र	पाण्डुरवर्ण
पित्तकोप में मूत्र	रक्तवर्ण
कफकोप में मूत्र	फेनयुक्त
सन्निपात में मूत्र	कृष्णवर्ण
अजीर्ण में मूत्र	तण्डुलतोयवत्

नवज्वर में मूत्र	बहु एवं धूम्रवर्णी
जीर्णज्वर में मूत्र	असृक्सदृश एवं पीत
वातपित्तकोप में मूत्र	धूम्रजलाभ
उदर में सम्यक्पाक न होने पर मूत्र	मातुलुंगरसाभास, सौवीराभ, जलोपम, चन्दनसन्निभ

तैलबिन्दु परीक्षा

परीक्षार्थ रोगीमूत्र में निक्षिप्त (डाला) तैलबिन्दु यदि –

पूर्व दिशा की ओर बढ़ें	शीघ्र आरोग्य
दक्षिण दिशा की ओर बढ़ें	ज्वर का रोग एवं क्रमशः आरोग्य
उत्तर दिशा की ओर बढ़ें	निश्चित आरोग्य
पश्चिम दिशा की ओर बढ़ें	सुख एवं आरोग्य
ईशानकोण की ओर बढ़ें	1 मास में मृत्यु निश्चित
आग्नेयकोण एवं नैऋत्य में फैलने पर या छिद्रित दिखे	मृत्यु निश्चित
वायव्यकोण में फैले	यदि अमृतपान भी किया जाए तब भी निश्चित मृत्यु
सर्पाकार होवे	वातदोष
छत्राकार होवे	पित्तदोष
मुक्ताकार होवे	कफदोष

दृक्परीक्षा

- ❖ एक नेत्र छोटा, दूसरा बड़ा एवं परस्पर मिलते हों - 3 दिन में मृत्यु

मुख परीक्षा –

अजीर्ण में मुख का स्वाद घृत पूर्ण सा होता तथा अग्निमान्द्य में कषाय के स्वाद का मुख होता है।

- ❖ किस-किस ऋतु में वातादि त्रिदोष कुपित होता हैं –

- ❖ हेमन्त, वर्षा और शिशिर ऋतु- वात प्रकोप
- ❖ प्रावृट् और निदाघ (ग्रीष्म)- पित्त प्रकोप
- ❖ वसन्त ऋतु- कफ प्रकोप

अन्य तथ्य

- निम्न को सर्वदिशाओं में देखने वाला किन्तु वस्तुतः ये सब न हों –

अभ्रदर्शी 6 मास में	वर्षादर्शी 3 मास में	चन्द्रदर्शी 2 मास में
सूर्यदर्शी 1 मास में	छिद्रदर्शी 10 दिन में	धूमदर्शी 5 दिन में

एवं ज्वालादर्शी सद्यः मृत्यु को प्राप्त होता है।

- कफदोष में वमनकर्म के अतिरिक्त (विशेषतः) नस्यकर्म करने का निर्देश है।
- 3 प्रकार का वयोमान - 16 वर्ष तक बाल्यकाल, 16 से 70 तक मध्य एवं 70 से ऊपर वृद्धकाल।

पथ्यकल्पना

भक्त	14 गुना जल में निर्माण
यवागू	षड्गुणैस्तोयैः संसिद्धा विरलद्रवा, वस्तिशोधनी
विलेपी	चतुर्गुणे तु संसिद्धा; व्रणाक्षिरोगिणी पथ्या तर्पणी आमशूलहरा
पेया	सिक्थान्विता तोये चतुर्दशगुणे; कुक्षिगदजित्
मण्ड	चतुर्दशगुणे सिद्धस्तोये त्वसिक्थकः धातुसाम्यकृत् स्रोतोमार्दवकृत्
कृशरा	दुर्जर, सर, बल्य, वातहर, मलश्लेष्मपित्तशुक्रप्रद
यूष	अष्टादशगुणेऽम्भसि, कण्ठकफापहः

स्वस्थवृत

- विविध अभ्यंग गुण - शिरोभ्यङ्ग से कर्ण में शीतलता
  कर्णाभ्यङ्ग से पैर में शीतलता
  पादाभ्यंग से नेत्ररोग का नाश
  नेत्राभ्यंग से दंतरोग का नाश।
- उष्णजल से स्नान - सामान्यतः बलकारक किन्तु शिरःस्नान से बल-केश-नेत्र हानि।
- अष्ट मङ्गलकारक वस्तुएँ - ब्राह्मण-गौ-अग्नि-स्वर्ण-सर्पि-सूर्य-स्त्री-राजा

षड्रस सेवन से धातुवृद्धि -

मधुर से रक्त	अम्ल से मज्जा	लवण से अस्थि	
तिक्त से मेद	कटु से मांस	कषाय से रस	अन्न से शुक्रधातु वृद्धि।

Shakti Classes Ayurveda

उपविशत (बैठना)- तुन्दकारक	चङ्क्रमण-आयुकारक
शयन - बलकारक	दौड़ना - मृत्युकारक।

- भोजन पश्चात् तुरंत दिवाशयन- भोजन पूर्व - तीव्र अग्निकारक
  भोजन पश्चात् - त्रिदोषकर
- जलपाक के त्रिविध काल - आम जल 1 याम में, श्रृतशीत अर्धयाम में एवं किंचित् उष्ण श्रृतजल चतुर्थयाम में जीर्ण।

दुग्ध का गुण-

कृष्णगव्य	श्रेष्ठ एवं त्रिदोषहर
पीतगव्य	वातपित्तहर
रक्तगव्य	परम वातहर
चित्रितगव्य	वातघ्न
श्वेतगव्य	कफकारक, गुरू
जिसका बछड़ा छोटा अथवा न हो	त्रिदोषकर

आविकदुग्ध - केश्य, वातज कास एवं केवल वात के रोग में श्रेष्ठ

गर्दभीदुग्ध - शाखावातहर, बालरोगघ्न

पूर्वाह्न में पयसेवन बृंहण	अग्निवृद्धिकर
मध्याह्न में सेवन	रूचिकर-मूत्रकृच्छ्र व अश्मरीनाशन
रात्रि में सेवन	दोषशामक।

घृत

पुराण: 'दशवर्षस्थितं', श्रेष्ठं - त्रिदोषतिमिरापहम् 10 वर्ष से अधिक पुराण रसायन
कुम्भ: 'शतवर्षस्थितं', - 'रक्षोघ्नं'
महाघृत: 100 वर्ष से अधिक का
पुराण: भक्षण से कासरोगघ्न, अञ्जन से नेत्ररोगजित् एवं शिरोभ्यंग से नेत्ररोगजित्

मधु

- सामान्यतः त्रिदोषहर एवं सन्निपातनाशन

8 प्रकार –

माक्षिक:	तैलसंकाशं, श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु, क्षयनाशन
भ्रामर	'स्फटिकोज्जवलम्', रक्तपित्तघ्नं, मूत्रजाड्याकरं, गुरु
क्षौद्र:	कपिशवर्ण, माक्षिकवत् ज्ञेयं विशेषात् मेहनाशनम्
पौत्तिक:	तैलसन्निभम; लघु-संग्राही-कफघ्न-व्रणनाशन
छात्र:	पीतकपिलवर्ण, सर्वत्र हितकर
औद्दालक:	पीतकपिलवर्ण, कुष्ठहर
दाल:	नानावर्ण, रूचिकर
आर्ध्य:	श्वेतपिशङ्गकम्, उत्तम चक्षुष्य

- मधु विशेषतः पित्तातिसारनाशन
- मधुपाक विधि: मधु 1 प्रस्थ, गोदुग्ध 2 कुड़व, हरिद्रा एवं अभया प्रत्येक 1 पल ले पकावे।

परिभाषा प्रकरण

- पंचभृङ्ग: देवदाली-शमी-भंगा-निर्गुण्डी-शमक (तालीश); 'रोगार्ते स्नानपानार्हे'
- षड्रस क्रम: कटु-तिक्त-कषाय-लवण-अम्ल-मधुर
- तिलतैल की शुद्धि हेतु पंचपल्लव से सिद्ध करना चाहिए
- कल्क परिभाषा: 'ईषत्पिष्टो भवेत्कल्क:'
- शिलाजतु: 2 माह तक शुद्धि का आदेश

लौहभस्म के विविध अनुपान -

त्रिफला - वलिपलितनाशन
पुनर्नवा व गोदुग्ध -परमबलवृद्धिक
पुनर्नवा रस - पाण्डुरोगहर
शिलाजतु - मूत्रकृच्छ्रनाशन
व्योष भारंगी मुध - धातुरुजाहर

Shakti Classes for Ayurveda

अभ्रक के भेद -

पिनाक	श्वेतवर्ण	कुष्ठकारक
दर्दुर	रक्तवर्ण	मृत्युदायक
नाग	पीतवर्ण	भगन्दरकारक
वज्र	कृष्ण	रोगसमूहजित

गन्धकजारित पारद गुण

- पारद सेवन काल में हंसोदक पथ्य
- पारद सेवन काल में षट् ककरादि वर्ज्य: कूष्मांड-कर्कटी-कोल-कलिंग-करमर्द-करीर

सवीर्यता अवधि

क्वाथ-कल्क-स्वरस	1 याम
चूर्ण-अञ्जन	3 मास
गुड़ व अवलेह	6 मास
तैल-घृत	1 संवत्सर

ज्वरचिकित्सा

- चतुर्थकज्वर : 'घोरं अन्तकं रोगसंकरम्'
- विषमज्वर में वातदोष की प्रधानता: 'नर्ते वातात्तु विषमो ज्वरः समुपजायते'
- ज्वर के कुल 10 उपद्रव वर्णित
- **'ज्वरादौ लंघनं शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्। ज्वरान्ते रेचनं प्रोक्तं एतत् ज्वरचिकित्सितम्।।'**

वातव्याधि चिकित्सा

- सूतिकाभरण रस: विशेषतः धनुर्वातनाशन

ऊरुस्तम्भ चिकित्सासूत्र

- **तत्रादौ कफनाशनः पश्चात् वातविनाशाय कृत्स्ना कार्या क्रिया**

शूल चिकित्सा

- शूल में वेदना स्वरूप - शङ्कुस्फोटनवत्
- शूल के कुल उपद्रव - 13
- **'वमनं लङ्घनं स्वेदः पाचनं फलवर्तयः। क्षारचूर्णश्च गुटिकाः शस्यते शूलशान्तये।।'**
- वातज शूल: स्वेद कर्म सुखावह

परिणामशूल चिकित्सा

- **'तत् शूलं दुर्विज्ञेयं महागदम्। आहाररसवहाना स्रोतसां दुष्टिहेतुकम्।।'**
- 10 उपद्रव - आनाह-गौरव-छर्दि-भ्रम-तृष्णा-ज्वर-अरुचि-कृशता-बलहानि-अतिवेदना
- **'लङ्घनं प्रथमं कुर्यात् वमनं च विरेचनम्। बस्तिकर्म परं चात्र पक्तिशूलोपशान्तये।'**

कुष्ठरोगचिकित्सा

- 'षष्ठे मासे शिरामोक्षं प्रतिमासं विरेचनम्। प्रतिपक्षं च वमनं कुष्ठे लेपं त्रहाच्चरेत्।।'
- सर्वाङ्गसुन्दरी गुटिका: उग्रकुष्ठहर

अम्लपित्त चिकित्सा

अम्लपित्त की सामान्य चिकित्सा –

❖ अम्लपित्त में परवल के पत्र और नीम को उबाल कर उनके क्वाथ में मन:शिला का चूर्ण, मधु और सेंधानमक के चूर्ण का प्रक्षेप देकर पान कराकर वमन कराना चाहिये और त्रिफला के क्वाथ में निशोथ के चूर्ण और मधु का प्रक्षेप देकर पान कराकर विरेचन कराना चाहिये।

- अम्लपित्त वाला रोगी अपने आप को जलता हुआ मानता हो (अधिक दाह जिसे होता हो) उसको प्रथम संशोधक ओषधियों द्वारा संशोधन कराकर पश्चात् अन्य ओषधियों का प्रयोग करना चाहिये।

ज्वलन्तमिव चाऽऽत्मानं मन्यते योऽम्लपित्तवान।
तस्य संशोधनं पूर्वं कार्यं पश्चाच्च भेषजम्।।

- अम्लपित्त के रोगी को सर्वप्रथम वमन तत्पश्चात् मृदुवीर्य ओषधियों से विरेचन और वमन-विरेचन कराने के पश्चात् स्नेहन ओषधियों से भली-भाँति स्निग्ध कर अनुवासन कराना चाहिये।

पूर्वं तु वमनं कार्यं पश्चान्मृदु विरेचनम्।
कृतवान्तिविरेकस्य सुस्निग्धस्यानुवासनम्।।

- अम्लपित्त यदि पुराना हो गया हो तो उसमें आस्थापन कर्म करना चाहिये, दोषों के संसर्गज (मिलित) होने पर दोष आदि की अपेक्षा करके उसमें औषध और आहार देना चाहिये।

आस्थापनं चिरोत्थेऽस्मिन्देयं दोषाद्यपेक्षया।
दोषसंसर्गजे कार्यमौषधाहारकल्पनम्।।

- अम्लपित्त के रोगी को सर्वप्रथम वमन तत्पश्चात् मृदुवीर्य ओषधियों से विरेचन और वमन-विरेचन कराने के पश्चात् स्नेहन ओषधियों से भली-भाँति स्निग्ध कर अनुवासन कराना चाहिये।

ऊर्ध्वदेहस्थिते वान्त्याऽप्यध:स्थं रेचनैहरेत्।
पाचनं तिक्तबहलं पथ्यं च परिकल्पयेत्।।

Shakti Classes for Ayurveda

वृन्द मत से चिकित्सा –

अम्लपित्त रोग में कफ-पित्त-नाशक क्रिया और गुड कुष्माण्ड तथा खंडामलकी का सेवन करना चाहिये।

अम्लपित्त रोग में पुराना गुड़, गौ का दूध और पीपल से विधिपूर्वक सिद्ध किया घृत और यदि इसमें विबन्ध भी हो तो 'कंसहरीतकी' का सेवन करना हितकर है।

स्नायुकरोग

- वृत्त-श्वेतवर्ण-तंतुनिभ जीव द्वारा उत्पन्न विसर्पवत् शोथ
- उपद्रव - संकोच, खंजता
- चिकित्सा- विसर्पवत्
- 'पातालगरुडीमूलं पिबेत् स्नायुकनाशनम्'

शिरोरोगचिकित्सा

- षड्बिन्दु तैल - कल्क का चतुर्गुण कृष्णतिलतैल एवं तैल का समभाग अजापय एवं तैल से चतुर्गुण भृंगराज स्वरस द्वारा तैलसिद्धि

➢ 'गुड़नागरकल्कस्य नस्यं मस्तकशूलनुत्'

नेत्ररोगचिकित्सा

❖ **'अक्षिकुक्षिभवा रोगाः प्रतिश्यायव्रणज्वराः। पञ्च एते पञ्चरात्रेण रोगा नश्यति लंघनात्॥'**

+ सर्व नेत्ररोगों में आँखे बन्द करा आरग्वधकषाय की सूक्ष्मधारा से सिञ्चन विशेष लाभकर।

****

Dr. Shakti Raj Rai

MD, Samhita & Siddhant

RAC, Varanasi

Shakti Classes for Ayurveda